Read India Books



एक बड़ी मुसीबत

हरमिन्दर ओहरी



RGF Pratham
SERIES

Original story (*English*) Kato Clever and the Big Trouble by Herminder Ohri



First edition: 2004

Illustrations: Herminder Ohri
Design: Moonis Ijlal
Hindi Translation: Pratham Books Team

ISBN: 81-8263-041-X

Registered Office :
PRATHAM BOOKS
930, 4th Cross, 1st Main,
MICO Layout, Stage 2,
Bangalore 560 076

Regional Offices in
Mumbai and New Delhi

Typesetting and Layout by:
Pratham Books



Printed by :
International Print-O-Pac Limited
New Delhi

Published by :
Pratham Books
www.prathambooks.org

एक बड़ी मुसीबत

लेखन एवं चित्रांकन
हरमिन्दर ओहरी



हिन्दी अनुवाद
प्रथम पुस्तक समूह

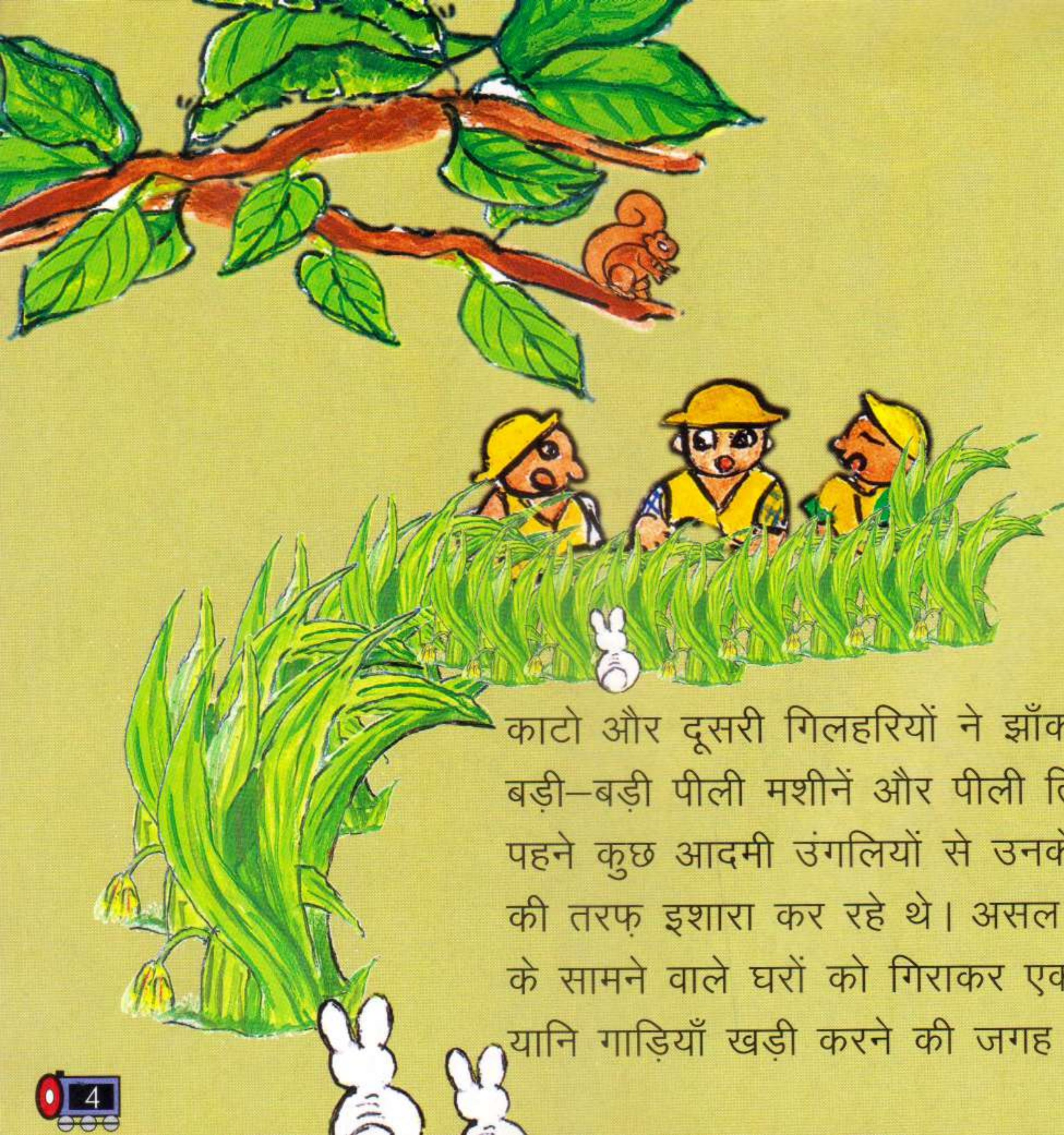
RGF Pratham
SERIES

शहर के एक छोटे से बगीचे में एक बड़ा–सा पीपल का पेड़ था। बगीचे में बहुत सारे छोटे जानवर मिलजुल कर रहते थे। पीपल पर गिलहरियों का परिवार रहता था। विक्की उसका बड़ा ही शेखीमार सदस्य था। एक बार उसका चचेरा भाई काटो दूर जंगल से उससे मिलने आया।





एक दिन जब वे सोने की तैयारी कर रहे थे, उन्हें बगल के मैदान से खटर–पटर की आवाज़ें सुनाई दीं।



काटो और दूसरी गिलहरियों ने झाँक कर देखा कि बड़ी–बड़ी पीली मशीनें और पीली तिकोनी टोपी पहने कुछ आदमी उंगलियों से उनके छोटे से बाग की तरफ़ इशारा कर रहे थे। असल में वे लोग बाग के सामने वाले घरों को गिराकर एक 'कार–पार्क', यानि गाड़ियाँ खड़ी करने की जगह बनाने वाले थे।



उन घरों में रहने वाले लोगों के लिए दूसरे घरों का इंतज़ाम तो हो गया था, लेकिन जानवर, चिड़िया और कीड़े–मकोड़ों के बारे में भला कौन सोचता है?



मशीनों को पहले–पहल छछुन्दरों ने देखा था। छछुन्दरों में सबसे बुजुर्ग थे, हवा सिंह। उन्होंने गुलाब सिंह को बताया और उन्होंने मक्खन सिंह को।





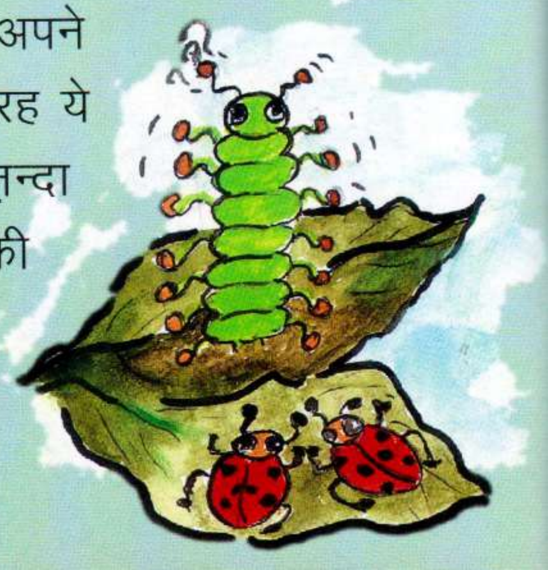
बात ये है कि जब वो बच्चे थे, लोग उन्हें हवा, गुलाब और मक्खन के नाम से पुकारते थे।



हवा सिंह ने गिलहरियों को खबर दी, गिलहरियों ने चिड़ियों को, चिड़ियों ने इल्लियों को, इल्लियों ने तितलियों को, और इस तरह से यह बात बगीचे के सभी निवासियों में फैल गयी।



उसके बाद तो जैसे भगदड़ ही मच गई हो। लोग इधर–उधर भाग रहे थे, उड़ रहे थे, दौड़–कूद, हँस–रो रहे थे। क्या करें? किधर जायें? हाय, यह कैसी उलझन, कैसी मुसीबत? इल्लियाँ बोलीं, "चलो पत्ते इकट्ठा करते हैं।" तितलियों ने कहा, "हमें फूल चाहियें।"



चूहों को अपने बिलों की चिन्ता थी और छछुन्दरों को भी अपने लिए बिल चाहिए थे। असल में सभी जानवर अच्छी तरह ये जानते थे कि पेड़–पौधे, झाड़ियों और घास के बिना वे ज़िन्दा नहीं रह पायेंगे। वे नर्म धरती पर पले बढ़े थे। सीमेंट की सख़्त ज़मीन पर रहना उनके लिए संभव नहीं था। रोते–रोते वो बोले, "हमें यह सब कहाँ मिल पायेगा? हम कैसे रहेंगे?"





काटो के चाचा–चाची सब कुछ चुपचाप सुन रहे थे। छोटी गिलहरियाँ अपनी माताओं के आँचल में दुबक कर बैठी थीं।

काटो ने खँखारकर अपना गला साफ़ किया और शर्माते हुए बोला, ''मैं दूर जंगल में रहता हूँ, क्यों ना हम सब वहीं चलें?'' वाह, ये हुई न बात! एक हलचल सी मच गयी। ''पर कैसे?'' और काटो ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा, ''गिलहरियों की 'सुपर फ़ास्ट एक्सप्रेस' सभी गिलहरियों, इल्लियों, तितलियों, मकड़ियों और सारे कीड़े–मकोड़ों को वहाँ ले जा सकती है। पक्षी उड़कर जा सकते हैं। छछुन्दर, चूहे और साँप परिवार को ज़मीन के नीचे से 'छछुन्दर एक्सप्रेस' लेकर जा सकती है।''





सभी ने काटो के उपाय की वाहवाही की। हवा सिंह दौड़कर 'छछुन्दर एक्सप्रेस' के ड्राइवर मिस्टर गिन्टू के पास पहुँचे और पूछने लगे, ''क्या 'छछुन्दर एक्सप्रेस' छछुन्दरों को दूर जंगल में ले जाएगी?''

ड्राइवर महाशय पहले तो घबराये, फिर शर्माये, थोड़ा हकलाये और फिर फ़र्माये, ''ज़रूर!''

हवा सिंह को लगा, उन्हें भी थोड़ा बड़प्पन दिखाना चाहिए। ''दोस्तों, घबराने की कोई बात नहीं। मेरे परदादा के भाई के दादा की चौथी चाची के ममेरे भाई की तीसरी भतीजी और दूसरे भतीजे 'दूर जंगल' में रहते हैं,'' उन्होंने दिलासा दिया।





सुबह–सवेरे 'गिलहरी एक्सप्रेस' और छछुन्दरों की 'छछुन्दर एक्सप्रेस' रवाना हुई–'छुक–छुक, छुक–छुक' अपनी सवारियों को लिये हुए 'दूर जंगल' की ओर। उसके पेड़ों, फूलों, तालाबों और नर्म–नर्म धरती की ओर।



काटो गिलहरी का परिवार बगीचे में रहता था। एक दिन कुछ लोग मशीनें लेकर पेड़ों को काटने आये। इस मुसीबत से काटो और उसके दोस्त कैसे बचे? जानने के लिए पढ़िये कहानी 'एक बड़ी मुसीबत'।

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

हमारी खूबसूरत दुनिया

रोन्दू और मुक्की

नौका की सैर

छुटकू मकड़ा

Pratham Books
Ek Badi Musibat (Hindi)
M.R.P. Rs.20.00

ISBN 81-8263-041-X
9788182630413